www.shodhpith.com ISSN (Online): 3049-3331

Shodhpith
International Multidisciplinary
Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)
Volume: 1 Issue: 4 July-August 2025

स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्य मैं दलित विमर्श

डॉ0 स्वीटी कुमारी

सहायक प्राचार्य, मैथिली विभाग, बलिराम भगत महाविद्यालय, समस्तीपुर

सारांश–

ई शोधपत्र स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्य मैं दलित विमर्शक उद्‌भव, विकास आ सामाजिक–सांस्कृतिक प्रभावक सम्यक् समीक्षा करैत छै। स्वतन्त्रता पश्चात् लोकतान्त्रिक संवैधानिकता, भूमि–सुधार, शिक्षाक प्रसार आ नगरिकी. करण मिथिला समाज मैं नव–नव आकांक्षा जगेलक; तथापि जाति–आधारित वंचना आ गरिमाक क्षतिबोधक दीर्घ परम्परा कारण दलित अनुभवनक व्यवस्थित साहित्यिक प्रतिनिधित्व देरिसँ स्थापित भेल। एहि अध्ययनमैं कविता, कथा, उपन्यास, नाटक आ आलोचनाक चयनित पाठक निकट–पाठ संग समालोचनात्मक समाजशास्त्र, सांस्कृतिक अध्ययन आ भाषिक विश्लेषणक अन्तर्विषयक पद्धति ग्रहण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठ–प्रसंग–पाठकक अन्तःक्रिया स्पष्ट होइछ। अध्ययन देखाबैत अछि जे दलित लेखन मैथिलीमैं वैकल्पिक वाच्य रचौत अछि, जतय आत्मकथात्मक स्वर, स्मृति–कथन, लोक–लय, कहाबत आ उपबोलिक प्रयोग पाठ्य–ऊर्जा दैत अछि। मुक्तछन्द, दस्तावेजी यथ. ार्थ, संवादप्रधान संरचना, बहुस्वरि कथन आ असमान समय–रचनाजेकाँ शिल्प–रणनीति श्रम–शोषण, भूमिसम्बन्ध, प्रवास, शिक्षा–वंचना, नगर–परिघटना आ गरिमा–संघर्षक परत–दर–परत उद्‌घाटन करैत अछि। भाषा–स्तर पर कोड–स्विचिंग, उच्चारण–भिन्नता आ उपबोलिक सृजनशील प्रयोग मानकीकृत वर्चस्वकैं चुनौती दैत "अपन बोली, अपन इतिहास"क सांस्कृतिक वैधता पुष्ट करैत अछि। स्त्री–अनुभव आ जातिक अन्तःसंयोग पर केन्द्रित रचना. सभ घरेलु आ सार्वजनिक दुनू क्षितिजपर हिंसा, वेतन–असमानता आ अवसर–वंचनाक रूपान्तरित रूप देखबैत, एकसंग सामुदायिक सहयोग, शिक्षा आ संगठन–निर्माणक नवान्वेषी सूत्र सेहो प्रस्तावित करैत अछि। एहि काजमैं संपादकीय–प्रकाशन संरचना, पाठ्यक्रम, पुरस्कार आ मंचगत प्रतिनिधित्वक असमानता सेहो रेखांकित भेल अछि; हिनकालमैं पत्र–पत्रिका, नाट्य–समूह आ डिजिटल मंच दलित लेखक–पीढ़ीक दृश्यता कैं सुदृढ़ गति देलन्हि। तुलनात्मक परिप्रेक्ष्यमैं हिन्दी–भोजपुरी–मगही आदिक समकालीन धारासँ संवादक संभावना अनुवाद–अध्ययन आ क्षेत्रीय आर्काइव–निर्माण दिशे प्रेरित करैत अछि। निष्कर्षतः स्वतंत्रोत्तर कालमैं मैथिली दलित विमर्श भाषा, शिल्प आ कथ्यकृतीनू स्तरपर परम्परागत सौन्दर्यबोधक पुनर्संयोजन करैत समावेशी साहित्यिक लोकाचारक मजबूत आधार गढ़ैत अछि। ई शोध प्रवृत्तिसभक मानचित्रण करैत एकटा कार्यसाधक विश्लेषण–ढाँचा सेहो देत, जतय भविष्यक दिशा रूपैं डिजिटल आर्काइविंग, पत्रिका–इतिहास, स्कूल–कॉलेज पाठ्यचर्या, अनुवाद–अध्ययन आ तुलनात्मक भारतीय भाषिक संदर्भक समावेश सुझाएल गेल अछि।

मुख्य–शब्द– स्वतंत्रोत्तर मैथिली, दलित विमर्श, आत्मकथात्मक स्वर, कोड–स्विचिंग, दस्तावेजी यथार्थ, स्त्री–अनुभव, समावेशी सौन्दर्यशास्त्र।

परिचय

स्वतंत्रता (1947)क बाद भारतक लोकतांत्रिक परिवेश आ संविधानक समानतामूलक धारणा भाषायी–सांस्कृतिक

क्षेत्रसभ पर गहिर प्रभाव छोड़लक अछि। मैथिली साहित्य सेहो ई परिवर्तन सँ अलग नहि रहल। ग्राम–आर्थिक ढाँचा, जाति–आधारित वंचना, श्रम आ पलायन, धार्मिक–सामाजिक प्रथासभ, आ स्त्री–अनुभव जेकाँ विषयसभ नव केन्द्र बनला। भारतीय दलित विमर्श जे "अनुभवक सत्य" आ "सामाजिक प्रयोजन"क सौंदर्यशास्त्र देलक, ओहि सँ मैथिली कथाभाषा, काव्य–स्वर आ आलोचनात्मक मानदंड प्रभावित भेलकृई व्यापक भारतीय बहसक एकटा क्षेत्रीय रूपांतरण छल। 92म संविधान संशोधन (2003) सँ मैथिलीकेँ आठम अनुसूचीमे मान्यता (7 जनवरि 2004 सँ प्रभावी) भेटलाक बाद संस्थागत आधार, पत्र–पत्रिका, पुरस्कार आ पाठ्यक्रमक क्षितिज विस्तृत भेल, जे हाशिये–आवाजक दृश्यता बढ़ेलाक ऐकटा संरचनागत कारण बनल। भाषा–आंदोलन सम्बन्धी अध्ययनोंमे देखायल गेल अछि जे सार्वजनिक क्षेत्रक विस्तार राजनीतिक–सांस्कृतिक दावेदारीसँ जुड़ल रहैत अछि, आ एतय दलित समुदायक सहभागिताक प्रश्न अनिवार्य भऽ उठैत अछि।

औचित्य एतय छथि जे मैथिली साहित्यक इतिहासलेखनमे विद्याापतिक काव्य, आधुनिक कवि–आन्दोलन, प्रवासी अनुभव आ कथा–परंपरा पर पर्याप्त लेखन भेटैत अछि, मुदा दलित समुदायक जीवन–अनुभव, सांस्कृतिक स्मृति आ राजनीतिक आकांक्षाक पाठ–विश्लेषण व्यवस्थित रूपेँ कम देखाइत अछि। भारतीय दलित सौंदर्यशास्त्र (लिंबाले, राजकुमार, वाल्मीकि आदिक द्वारा प्रतिपादित)क सिद्धांतसभकेँ मैथिलीक भौगोलिक–सामाजिक विशिष्टतासँ (स्थानीय बोली–रूप, मिथिलांचलक ग्रामीण अर्थतंत्र, नेपाल सीमा–पर समाज) जोड़ि कऽ जाँचब आवश्यक अछि। एहि अध्ययनक उद्देश्य छन्कृ1947क बादक चयनित मैथिली कविता–कथा–नाटकमे दलित आत्मानुभव, श्रम, देह–. राजनीति, भूमि–संबंध, पलायन आ धार्मिक–सामाजिक प्रथाक प्रस्तुति–तकनीकक सूक्ष्म विश्लेषण ।

ऐतिहासिक–सामाजिक पृष्ठभूमि

स्वाधीनता–पश्चात भारतक सामाजिक–राजनीतिक बिन्यासमेँ जाति प्रश्न निकसिकए राज्य–नीति आ सार्वज. निक विमर्शक मुक्य धुरी रहल। 1980 क दशकक उत्तरार्धमेँ दंडात्मक प्रावधानक सुदृढीकरण आ आरक्षण–आधारित प्रतिनिधित्वक बहस व्यापक जन–क्षेत्रमेँ पहुँचल, जेकरा संग दलित समुदायक गरिमा, अधिकार आ समान अवसरक सवाल लोक–भाषा, लोक–अनुभव आ श्रमजीवी जीवन–दुनियासँ जुड़ल साहित्यिक अभिव्यक्तिकेँ नयका औचित्य देलक। 1990 क मंडल आन्दोलनक सामाजिक प्रभावसँ शिक्षा–रोजगार आ संस्थागत पहुँचपर केंद्रित विमर्श मि. थला अंचलक लेखनीमेँ स्पष्टे देखायलकृकथा, कविता आ निबंधमेँ वर्ण–सत्ता, बहिष्करण, प्रतिरोध आ आत्मसम्मानक विषय–विस्तार भेल। पंचायत स्तर पर विकेंद्रीकरणक ढाँचा मजबूत होएबाक संग वंचित समुदाय आ महिला सभक राजनीतिक सहभागिता बढल, जकरे परिणामस्वरूप ग्रामीण जनजीवनक ठोस बिम्बकृभूमि, मजदूरी, विद्यालय/आंग. नवाड़ी, स्वास्थ्य सुविधा, बसोबासक संरचनाकृरचनाक केंद्रमेँ अबैत गेल। ई सामाजिक–नीतिगत पृष्ठभूमि स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्यमेँ दलित विमर्शक उभार लेल उर्वर जमीन बनल, जतए अनुभव, अधिकार आ सौन्दर्य–बोध एकसंग संवाद करैत देखायल।

एहि परिवर्तनक संग भाषा–नीतिक स्तरपर 2003 मेँ मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमेँ मान्यता मिलल, जे बड़ा पड़ाव छल। अपन मातृभाषामेँ पाठ्यक्रम, अनुसंधान, अनुवाद, अनुदान आ प्रकाशनक अवसर बढ़ल आ लेखक–पाठक दुनूक आत्मविश्वास सुदृढ़ भेल। संस्थागत रूपेँ दिल्लीस्थित साहित्य अकादेमी 1966 सँ मैथिलीमेँ वार्षिक अकादेमी पुरस्कारक निरन्तर परंपरा द्वारा विधागत विविधताकृकथा, काव्य, नाटक, आलोचनाकृकेँ प्रतिष्ठित करैत आबएल अछि; ई पुरस्कार निन्न पीढ़ीक लेखक लेल प्रेरक संकेत बनल आ मूल्य–मानदंडक निर्माणमेँ सहायता देलक। राज्य–स्तरपर पटना–आधारित 'मैथिली अकादमी' (स्थापना 1976) पत्र–पत्रिका, सम्मेलन आ सम्मानक माध्यमसँ भाषा–समुदायक सांस्कृतिक आधार केँ सुदृढ़ करैत रहल, जकर फलस्वरूप पठन–गोष्ठी, आलोचना आ विमर्शक मंच विस्तृत भेल। ऐतिहासिक पत्रिका परंपराक आधुनिक रूपान्तरण डिजिटल/स्वतंत्र मंच धरि पसैरल आ नव लेखक लेल प्रादर्श उपलब्ध करेलक। ई संस्थागत माहौलमेँ दलित–जीवनक आत्मकथात्मक/यथार्थपरक आख्यान सभकेँ नैतिक–वैधानिक वैधता भेटल, आ ओ सभ मिथिला समाजक अन्तःवस्तुकृजातिगत वर्चस्व, सामाजिक गतिशीलता, स्त्री–आधारित सक्रियताकृकेँ अंतर्संबन्धित दृष्टिसँ पकैड़ए लगल।

समकालीन मैथिली लेखनक भाषा–शिल्पमेँ एतबा दौरान लोक–प्रयोग, कहावत, मुहावरा आ गाँव–कीन्द्रित वाक्य–विन्यासक समावेश बढ़ल। पत्रिका, लघु–पत्रिका आ परिसंवादक बहुलता लेखक–समुदायक विकेन्द्रित 'मंच' बनल, जतए दलित अनुभूतिक स्वर संवेदनशील तरीकासँ उद्घाटित होए लगल। एकर संग पंचायती संस्थामेँ

आरक्षण आ महिला–नेतृत्वक उद्भव सँ जे नयका स्थानीय मुद्दासभ उठल, ओ सभ कथ्यक नजदीकी, दस्तावेजीय ताजगी आ रिपोर्टाज–धर्मित स्वर कैं जन्म देलक। एकर समेकित परिणाम ई भेल जे स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्यमैं दलित विमर्श 'परिधि' सँ 'केंद्र' दिस सरकलकृअखन ई केवल दार्शनिक आदर्श नहि, बल्कि सामाजिक न्याय, गरिमा आ सहभागिताक ठोस अनुभव–संसारक भाषिक पुनर्निर्माण बनेल अछि।

सैद्धांतिक ढाँचा

स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्य मैं दलित विमर्शक सैद्धांतिक ढाँचा मुख्य रूप सँ तीन आधार पर टिकल देखाइत अछिकृआंबेडकर, फुले आ दलित स्त्रीवादकृआ ओहि सँ उपजल जाति–वर्ग–लिंग आ प्रतिरोध–प्रतिनिधित्व–मुक्ति केर बहस। आंबेडकरक दृष्टि मैं लोकतंत्र मात्र शासन–प्रणाली नहि, बल्कि सामाजिक जीवनक मूल्य–त्रयीकृस्वातंत्र्य, समता, आ बंधुत्वकृछैक। जाति हुनका लेल "विभाजनक श्रम" नहि, "श्रमिकक विभाजन" थिक, जे सामाजिक नैतिकता आ जनहितक चेतना कैं कुचलैत अछि। ई नैतिक कसौटी साहित्यिक विश्लेषण मैं पात्र–विकास, कथन–शैली, आ भाषा–रजिस्टरक मुल्यांकनक आधार बनैत अछि। आंबेडकर स्पष्ट करैत छथि जे जाति केवल भौतिक देवाल नहि, विचारक अवस्था थिक; ताहि लेल वास्तविक उपचार सामाजिक पुनर्संयोजन सँ होएत एहि बिंदु सँ मैथिली कथ. ा–काव्य मैं जाति–अनुशासनक चुनौती दैत आवाज कैं नैरेटिव न्यायक मानदण्ड भेटैत अछि।

फुलेक प्रतिमान ई नैतिकता कैं जनवादी औज़ार दैत अछि शिक्षा, लोक–भाषा आ इतिहासक प्रतिपाठ। ब्राह्मण ावादी वर्चस्वक वैचारिकी कैं ऊँहाँ मिथकीय रूपक–विमर्श (अवतार–कथा आदिक परिहास) आ लोकनीतिक भाषा सँ उघाड़ैत छथि, आ आग्रह करैत छथि जे "गाम–गाम मैं शूद्र–अतिशूद्र लेल पाठशाला" बनय अर्थात् ज्ञान–उत्पादनक अधिकारक पुनर्वितरण। ई दृष्टि मैथिली साहित्य मैं बोली , आत्मवृत्तान्त, आ संस्मरण–लेखनक वैधता बढ़बैत अछि, किएक तँ ओहि मैं दैनन्दिन श्रम–अपमान–आकांक्षाक सजीव साक्ष्य बसल रहैत अछि। फलतः पाठक केंदर केवल "उच्च" भाषाई सौन्दर्यशास्त्र नहि, बल्कि लोक–अनुभवक बौद्धिक प्रतिष्ठा बनैत अछि।

दलित स्त्रीवाद ई दुनू धुरि कैं आलोचनात्मक रूप सँ विस्तृत करैत अछि। शरमिला रेगे दर्शबैत छथिन्ह जे दलित स्त्रीक अनुभवकृ'टेस्टिमोनियो'कृकैं ज्ञान–उत्पादनक वैध विधा मानल बिना "अन्तर"क नामकरण खोखल रहि जाएत अछि; मुख्यधारा नारीवाद मैं जाति अक्सर अदृश्य भ' जाइत अछि। एहि सँ मैथिली पाठ–विश्लेषण मैं प्रश्न उठैत अछिकृकिए बोलैत अछि? कारा लेल? कथनक दृष्टि पर ककर गेज हावी अछि? इंटरसेक्शनैलिटी यहाँ 'ब्राह्मणवादी पितृसत्ता' केर रूप मैं समझायल जाएत अछिकृअर्थात् जाति–पुनरुत्पादन केवल अर्थनीति नहि, बल्कि स्त्री–देहक नियन्त्रण, विवाह–एण्डोगैमी, उत्तराधिकार आ सांस्कृतिक अनुशासनक तंत्र सँ घनिष्ट रूपैं जुड़ल अछि। ताहिं साहित्यिक प्रतिनिधित्व ओखने सार्थक बनैत अछि, जँ श्रम, देह, घर–लोकनिक हिंसा, आ सार्वजनिक दमनक प्रसंग कैं जाति–वर्ग–लिंगक गाँठ मैं पढ़ल जा सकय।

एहि संयुक्त ढाँचा सँ "प्रतिरोध–प्रतिनिधित्व–मुक्ति"क विमर्श स्पष्ट होइत अछिकृआंबेडकर सामाजिक–नैतिक क्षितिज (समता–स्वातंत्र्य–बंधुत्व) दैत छथि, फुले ज्ञान आ भाषा–लोकतंत्रक जनवादी औज़ार दैत छथि, आ दलित स्त्रीवाद 'स्टैण्डपॉइंट' द्वारा आवाज–अधिकारक राजनीति कैं केंदर बनबैत अछि। स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्यकृ विशेषतः यथार्थपरक कहानी, आत्मकथात्मक स्वरसहित कविताकृकैं जँ एहि त्रिवेणी मैं पढ़ल जाए, त' दलित विमर्शक सौन्दर्यशास्त्र आ नैतिक प्रतिबद्धता दुनू अधिक प्रखर भ' कड् सामने अबैत अछि, आ मुक्ति–परियोजनाक रचनात्मक नक्शा साफ होइत अछि।

समय-खंड आधारित रूपरेखा

स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्य मे दलित विमर्शक विकास समय–खण्ड अनुसार स्पष्टरूपैं देखायल जा सकै छैकृआरम्भक सामाजिक–यथार्थ सँ लैत आब डिजिटल सार्वजनिकता धरि। 1947 क' बादक "न्यू अवेकनिंग" सँ मैथिलीमे संस्थागत सक्रियता (पत्र–पत्रिका, सम्मेलन) बढ़ल आ 1965 मे साहित्य अकादेमिक द्वारा भाषाक आधिक. ारिक मान्यता सँ आधुनिक लेखनक रेखांकित धारा बनि गेल। एहि धारामे 2003 मे मैथिली क' संविधानक अष्टम अनुसूचीमे सामिल होबो पहिचान, प्रतिनिधित्व आ नीति–बहसक नब आधार बनल, जकर प्रभाव दलित–न्यू लेखन परो स्पष्ट देखायल पड़ै छै।

1950–1970: सामाजिक यथार्थ आ आरम्भिक स्वर। ई दौरमे कथा आ कविता दुनूमे जाति–आधारित श्रमिक

जीवन, बाढ़–अकाल, पलायन आ अपमानक रोजाना अनुभवक यथार्थवादी प्रस्तुति आउने लगल। 'भारती' आ 'विभूति' जहिना पत्रिकासभक गतिविधि आ मैथिली साहित्य परिषद्क प्रयास सामाजिक–सांस्कृतिक विमर्शक मंच बनेलन्हि। एहि मंचसभ पर लोक–स्मृति, लोक–कथा आ श्रम–जीवनक प्रसंग बादक दशका हेतु स्रोत बन्नय लगल।

1970–1990: जन–आंदोलन/ग्रामीण संकट आ कथादृकविता। देशव्यापी सामाजिक आंदोलनेर बीच मैथिलीमे विरोध, सम्मान आ मुक्ति–चिन्तनक रूपक तेज भेल। गीतात्मकता सँ आगाँ बढ़ि धारदार कथ्य, प्रतिरोधी शब्दावलि आ आत्मसम्मानक आग्रह प्रमुख भेल। भारतक विभिन्न भाषासभमे उभरैत दलित साहित्यक सौन्दर्य–राजनीतिकृस्वरक आत्मानुभव, दासताक विखण्डन, आ प्रतिनिधित्वक माँगकृएहि मैथिलीक रचनाशीलताक वैचारिक पृष्टभूमि प्रदान कएलक।

1990–2005: मण्डल–उत्तर संदर्भमे नब दलित स्वर। आरक्षण, प्रतिनिधित्व आ विश्वविद्यालय–परिसरक बहससँ लेखनमे आत्मकथात्मकता, दस्तावेजी टोन आ तर्कप्रधान शैली आयल। एहिमे लोक–स्मृति/लोकगाथाक संकलन, पेशागत–समुदायगत इतिहासक पुनर्पाठ आ गाँवदृशहरक असमान अनुभवक तुलनात्मक निरूपण देखायल गेल। समय–सीमामे मैथिली साहित्यक उत्तर–स्वतंत्रता इतिहास पर केन्द्रित अनुसंधान–पुस्तक आ आलोचनात्मक इतिहाससँ ई धारा रूपायित भेल आ संस्थागत अध्ययनक विषय बनल।

2005 वर्तमान विविधता, डिजिटल मंच आ नव–लेखन। ई कालमे ई–पत्रिका, ब्लॉग, सोशल मीडिया आ अक. ादेमिक–प्रकाशनक सेतु पर दलित युवा–रचनाकार अपन बोली–व्यवहार, प्रवास/नगरीय श्रम, लिंगदृवर्गदृजाति सम्बन्ध मे अनुभवक इंटरसेक्शनल पाठ प्रस्तुत करैत छथि। साहित्य अकादेमीक नवीन संकलन आ अनुवाद–परिया. जनासभ मैथिली दलित कथादृकविताक प्रसार बढ़ेलन्हि; संपादित खण्डसभ रचनात्मक बहुस्वरता कँ प्रमाणित करैत छथि। परिणामस्वरूप, दलित विमर्श आब सिर्फ़ पीड़ा–कथ्य नहि, बल्कि नीति, अधिकार आ सांस्कृतिक स्मृतिक बहुस्तरीय विमर्श बनि चुकल अछि।

विधा–वार अध्ययन

स्वतन्त्र्योत्तर मैथिली साहित्य मँ "विधा–वार अध्ययन" केर सन्दर्भ मँ दलित विमर्शक धारा विभिन्न रूप–विन्यास आ शिल्प–संरचना मँ देखाय पड़ैत अछि। कविता मँ दलित अनुभव पहिने "दर्दक कथन" हैसियत सँ शुरू भए ओकरा "प्रतिरोधक कहानि" तक लय गेल अछिकृअर्थात् निजी अपमानक पीड़ा सामूहिक अस्मिता आ सामाजिक न्यायक माँग मँ बदलैत देखाइत अछि। ई कविता–धारा सत्ताक केन्द्रसभ सँ टक्कर दैत भाषा, लोक संदर्भ आ प्रतीक सभक सहारे नवान्वेषी रूप ग्रहण करैत अछि; एतय काव्य–भाषाक सहजता, लोक–धुनक लय आ आत्मकथा–नुमा टोन मिलि क' "हमरो स्वर"क स्थापना करैत अछि।

कहानी मँ जातिगत संरचनाकँ उघारबाक लेल यथार्थवादक कठोर कौर प्रयोग होइत अछिकृगाँव–शहरक रोजमर्रा, रोज़गार/भूमि/विद्यालय/कार्यालय आ विवाह–सम्बन्धी राह–बेराह मँ जाति किदिनुक उपस्थिति राखैत अछि, ओहि वस्तुस्थितिकँ कथानक, संवाद आ दृष्टिकोणक बदलाव सँ 'सिस्टम' पर उँगली करैत देखैत छी। स्व. तन्त्र्योत्तर काल मँ मैथिली लघुकथा आ कहानीक प्रवाह सामाजिक विषयक संग धारदार भेलकृजेकर सांस्कृतिक दबाव आ नैतिक प्रश्न कहानीकँ केवल सहानुभूतिपरक न' रहि, सवाल करयवला विधा बना देलक।

उपन्यास मँ "आन्दोलनदृस्मृतिदृपहिचान" त्रयी खास रंग मँ उद्भासित अछि। पात्र–संरचना मँ जाति–चिन्हित नायक/नायिका अपन देह–इतिहास, परिवारक स्मृति, विस्थापनक दंश, आ संघर्षक राजनीति सँ पहिचान गढ़ैत अछि। कथावाचनमँ समय–छलाँग, बहु–वक्ता रचना, स्मृतिफ्लैश आ अभिलेखी शैली मिलि क' सामाजिक परिवर्तनक लंबा फ्रेम बनेल जाइत अछिकृएहिमँ आंदोलनक ऊर्जा आ निजी जीवनक दैनंदिनी एक जगह टकराइत–घुलैत अछि।

नाटक/रेडियो–नाटक/एकांकी सार्वजनिक विमर्शक कारगर साधन भेल अछि। रंगमंच आ आवाजक ताक़त सामुदायिक सभामँ प्रश्न पहुँचबैत अछिकृबेहतर श्रोता–पहुँच, कम लागत आ तात्कालिकता कारण रेडियो–नाटक सामाजिक सरोकारक प्रसार करैत आबिये रहल अछि। स्वतन्त्र्योत्तर दौरमँ मैथिली नाटक नव यथार्थ, शहरी–ग्र. ामीण तनाव, आ अधिकार–चेतनाक विषय ल' आगे बढ़ल। साहित्य अकादमी आ अन्य संस्थानी मंचसभ पर मैथिली कविता/आधुनिक प्रवृत्तिक संग संग विमर्श–केन्द्रित सत्रसभ आयोजित भेल, जकरा कारण जन–स्तर पर मुद्दा उठल, बहस उपजल आ नव लेखन प्रेरित भेल।

आत्मकथा/संस्मरण मेँ 'स्व' लिखबाक अर्थ केवल निजी जीवन–रेखा न' अछि; ई 'स्व' सामूहिक पीड़ा, अपमान आ संघर्षक दस्तावेज़ बनि जाइत अछि। दलित जीवन–कथन मेँ भाषिक निर्भीकताक संग "कथनक अधिकार"क दावा होइत अछिकृजे आत्म–सम्मान, शिक्षा, रोज़गार, देहदृश्रम आ देहदृराजनीतिक प्रश्नसभक मार्मिक गवाही देताह। एहि शैलीक नैतिक बल ई अछि जे ओ पाठककेँ गवाह बनबैत, मुकदमाक सभूत गिनबैत, परिवर्तनक आग्रह करैत अछि ।

लोकसाहित्य/गीत/कथा मेँ दलित स्वर सभसँ पुरान आ जीवित स्रोत छनिकृमड़ई, समा–चकेवा, विरहा–जेकाँ राग–रंगीनी मेँ श्रम, अपमान, भरोसा, व्यंग्य आ सामूहिक स्मृतिक रंग बसल अछि। एही लोक–नाद सँ आधुनिक कवि–लेखक प्रेरणा लैत "उच्च" भाषिक जड़ता तोड़ैत छथि, जेकर फलस्वरूप लिखित आ मौखिक परम्परा बीच सेतु बनेल गेल। संस्थागत स्तर पर लोक–आदिवासी/ओरल साहित्य पर कार्यक्रमसभ, कार्यशाला आ चर्चा–सत्रसभ ई स्वर केँ प्रोत्साहन देने रहबाक प्रमाण दैत छथि ।

एहना तरहेँ, कविता हौंसला देताह, कहानी संरचनाकेँ बेनकाब करैत, उपन्यास लम्बा इतिहास लिखैत, रंगमंच/रेडियो जन–बहस जगबैत, आत्मकथा 'स्व'क गवाही बनैत आ लोकधुनदृलोककथा स्मृतिक नदी जोगबैतकृसमग्र मिलि मैथिली दलित लेखन स्वतन्त्र्योत्तर सौन्दर्यशास्त्रक नब परिभाषा गढ़ैत अछि; जेकर केन्द्रमेँ मानवीय गरिमा आ अधिकारक अविचल आग्रह अछि।

प्रतिनिधि लेखक/पाठ समूह (स्वतंत्रोत्तर)

स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्यमे 'दलित विमर्श' केँ प्रतिनिधि लेखक/पाठ समूहक चर्चा करैत पहिने तारानन्द वियोगीक रचनात्मक हस्तक्षेप देखबाक पड़ैत अछि। हुनक पहिल कवितासंग्रह 'हस्तक्षेप' (1996) मैथिलीमे दलित विमर्शक स्पष्ट आवाज़ बनि उभरलकृपरम्परागत अभिजनवादी मान्यतिसँ टक्कर लेइत सामाजिक असमानता पर प्रत्यक्ष प्रहार करैत। ई क्रम आगाँ बढ़ैत 'बाभनक गाम' जेकाँ कविता (2000 क आसपास) सार्वजनिक बहसक विषय बनि गेल, जे सचमुच मिथिलाक सामाजिक यथार्थमे जातिगत संरचना, हिंसा आ करुणा दुनूकेँ एक साथ रेखांकित करैत अछि। एहि कवितासँ उत्पन्न सामाजिक–वैचारिक मंथनकेँ आलोचक–संपादकीय मंचसभ 'अन्तिका' आदिमे गंभीरता सँ लेल गेल, जतय वियोगी अपन दृष्टिकोणकेँ रचनात्मक–आन्दोलनी स्वर देलनि। ओ अपन आलोचनात्मक कृति 'मैथिली दलित विमर्श' आ अन्य ग्रंथसभमे उपेक्षित परम्परासभक पुनर्पाठ करैत, मैथिली साहित्यक इतिहास आ वर्तमानमे दलित/सुबाल्टर्न स्वरक संगत/संग्राम दुनूकेँ देखेलनि।

एहि धारा सँ जोड़ि कय किछु लेखक–समूह विशेष उल्लेखनीय छथि। महेन्द्र नारायण राम मैथिली लोक–सा. हित्यक इतिहास, विशेषतः 'सलहेस' लोकगाथा पर सम्पादन/लेखनक माध्यम सँ दलित–बहुजन परम्पराक सजीव दस्तावेजीकरण करैत छथि; हुनक कृतिसभ मिथिलाक लोक–समाजमे समानता आ प्रतिरोधक दीर्घ स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।

रामकृष्ण परार्थी, उमेश पासवान, रघुनाथ मुखिया आ प्रीतम निषाद जेकाँ रचनाकारसभक लेखनीमे 'नीचला अन्त्यज' जीवनानुभव, असमानता आ आत्मसम्मानक प्रश्न नया भाषा पाबैत अछिकृजेकर संकेत प्रगतिशील कथा. कार–समालोचकसभ द्वारा बारंबार देल गेल अछि। उमेश पासवानक 'वर्णित रस' लेल साहित्य अकादेमीक युवा पुरस्कार (2018)ओहि नव–स्वरक संस्थागत स्वीकृतिक उदाहरण सेहो अछि।

ई प्रवृत्तिक समानान्तर विभा रानी कथाकर, नाट्यकार आ अनुवादक रूपमे उपेक्षित/हाशियेपर पड़ल स्वरसभकृ नारियोन, ग्रामीण–शोषित समुदाय, प्रवासी मजदूरकृकेँ केन्द्रमे आनैत छथि। हुनक नाटकसभ ('दूसरा आदमी, दूसरी औरत', 'भीखारिन', 'मेन कृष्ण कृष्ण की' आदि) आ मैथिली उपन्यास 'कनिया एक घुंघरूआ वाली'कृजे अन्तिका प्रकाशनकाँड़ि 2022मे प्रकाशित भऽ सम्मानित भेलकृसांस्कृतिक–लैंगिक असमानता, देह–श्रमक राजनीति आ भाषा–. समुदायक अभिलाषाक उन्मेषक कथा कहैत अछि। विभा रानीक रंगकर्म–लेखनक सम्यक् सूची विभिन्न साहित्यिक मंचसभक अभिलेखमे उपलब्ध अछि आ ई साफ करैत अछि जे ओ कथा/नाटक/अनुवाद सभमे 'उपेक्षित स्वर' केँ प्रतिष्ठित करबाक सतत चेष्टा करैत छथि।

समग्र दृष्टिसँ, वियोगीक 'हस्तक्षेप' सँ उद्भूत विमर्श जँ एक तरफ़ मिथिलाक सामाजिक–सांस्कृतिक संरचनाक आलोचनात्मक पुनर्पाठ करैत अछि, तँ दोसर तरफ़ महेन्द्र नारायण राम आदिक लोक–इतिहासक अध्ययन ओहि विमर्शकेँ गँभावर बनबैत अछि। ई पंक्तिकृपरार्थी, पासवान, मुखिया, निषाद आदिक लेखनकृआ विभा रानीक बहुभाषिक नाट्य–आख्यानकृस्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्यमे 'दलित दृष्टि' केँ बहुपहचान, बहु–शैली आ बहुभाषिक संवादमे परिण

ात करैत अछि; जतय कविता, कथा, आलोचना, लोक–अनुसंधान आ रंगकर्म एक दोसरासँ संवाद करैत समकालीन असमानता/प्रतिरोधक संधि–बिन्दु बन्नैत अछि। एहि तरहेँ प्रतिनिधि लेखक/पाठ समूह 'विषय–वस्तु' मात्र नहि, बल्कि भाषिक–आलोचनात्मक ट्वीस्ट देलनिकृजेकर परिणामस्वरूप मैथिली साहित्यक मुख्यधारामे दलित/सुबाल्टर्न स्वर स्थायी आ वैचारिक रूपमे प्रतिष्ठित भेल अछि।

दलित स्त्री–विमर्श

स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्यक मूलभूत प्रश्नसभकृजाति, लिंग आ वर्गकृएक दोसरासँ गुन्थल स्थितिकेँ खोलैत छथि। एहि संदर्भमे "दलित स्त्री–विमर्श" एहन चौकठ बनैत अछि, जे दलित स्त्रीकेँ अनुभवक केन्द्रमे राखि मिथिला–समाजक सांस्कृतिक–आर्थिक गतिकेँ देखने चलैत अछि। दलित स्त्रीक अनुभवमे सार्वजनिक/कार्यस्थल आ निजी घरेलू क्षेत्रक रेखा बारंबार टूटैत रहैत अछि, जहिएँ लिंग–आधारित हिंसा, जातीय अपमान आ श्रमक अनाड़ित शोषण एक यथार्थ रूप लैत अछि। ई स्थिति पर शुरुआतिक वैचारिक संकेत देबैत गोपाल गुरु "दलित विमेन टॉक डिफरेंटली" मेँ कहैत छथि जे दलित स्त्रीक स्वर 'भिन्न' अछिकृकारण ओ सभ एकै बेर जाति आ पितृसत्तात्मक दमनक दोहरो दबाव सँ जुझैत छथि, आ ओहिठाम बलात्कार/सार्वजनिक हिंसा राजनीतिक–सामाजिक संदेशक हथियार बनि जाइत अछि। शार्मिला रेज सेहो ई 'भिन्नता'केँ महज वर्णन नहि, बल्कि दलित–स्त्रीवादी स्टैण्डपॉइंटक रूपमे रखैत छथिकृअर्थात् ज्ञानोदयक आधार ओहि स्त्रीसमूहक ठाढ़ ठेकानासँ जे प्रतिदिन शोषण झेलैत अछि; एहि सँ प्रतिनिधित्व आ बोलबाक राजनीति दूनू बदलिए अछि।

हिंसा मात्र शारीरिक नहि अछि; ई सांकेतिक, कानूनी, संस्थागत रूपमे पुनरुत्पन्न होइत रहैत अछि। उमाश्री चक्रवर्ती "ब्राह्मणिकल पैट्रियार्की"क अवधारणामेँ देखबैत छथि जे जाति–शुचिता आ पितृवंश रक्षणक नाँए स्त्री–देहक कड़ोर निगरानी होइत अछि; यैह देह–राजनीति आ विवाह/यौनिकता पर नियंत्रणक आधार भेलऽक बादमे घरेलू श्रम, प्रजनन–श्रम आ सस्ती मजदूरीसँ जुड़ि जाति–लिंगक संयुक्त संरचना बनबैत अछि। मैथिली कथा–कवितामेँ एहन अनुभव सभक संकेतकृग्राम्य घरेलू काममेँ दलित स्त्रीक अकल्पनीय बोझ, मज़दूरीक असमान दर, आ 'लाज–सम्मान'क नाँए जनाना गतिविधिक परहेजकृसामाजिक यथार्थक रूपमेँ लौटैत अछि। कल्पना आ वसंथा कन्नबीरन बतबैत छथि जे जाति–संबंध आ लिंग–संबंध दूनू बल–आधारित 'ऑर्डर'द्वारा चलाओल जाइत अछि; अतः दलित स्त्री पर हमलाकृघर सँ बाहर निकसलाबेलासँ ले' पंचायत/थानामेँ न्याय माँगलाबेलासँ धरिकृ'व्यवस्था' केँ बनाए रखबाक क्रूर उपाय बन्न जाइत अछि।

एहि भौतिक–सांकेतिक हिंसाक बीचो दलित स्त्रीक 'एजेंसी' (सक्रिय कर्तृत्व) निरन्तर उभरैत अछि। हुनक आवाज आत्मकथा, मजदूर आन्दोलन, आ अम्बेडकरवादी सामाजिक संगठनमेँ स्पष्ट सुनाइ पड़ैत अछि। रेज जे 'रियल फेमिनिज्म'क बहाने दलित स्त्रीक मुद्दासभकेँ ओझरयबाक रचनात्मक आलोचना करैत छथि, ओहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे 'नारी' नामक एक–सा श्रेणी साँच पते नहि; दलित स्त्रीक मुक्तिकृभूमि, शिक्षा, आरक्षण, सुरक्षा, आ यौन–हिंसा विरुद्ध न्यायकृअलग राजनीतिक प्राथमिकता मंगे छै। एहि दोहरे बोझक बावजूद सामुदायिक नेटवर्क, स्वयं–सहायता समूह, आ विद्यालय/आँगनबाड़ी सन सार्वजनिक ठाम पर दलित स्त्रीक उपस्थिति नव–प्रकारक सार्वजनिकता बनाए रहल अछिकृजहि ठाम ऊ अपन कथा दर्ज करैत छथि, मोल–भाव करैत छथि, आ सामुदायिक निगरानीक विरुद्ध देह–स्वायत्तताक सवाल उठबैत छथि।

मातृत्व आ देह–स्वायत्तता विषयमेँ दलित स्त्री–विमर्श खास तर्क दैत अछिकृमातृत्वकेँ मात्र 'त्याग'क प्रतीक बना देनाइ, या कतिपय सुधारवादी भाषा मेँ ओकरा 'पवित्रता'क चौखटक भीतर कैद क' देनाइकृदोनो जाति–लिंग जोड़क फायदा लेल प्रयोग होइत अछि। एहि यथार्थक बीच दलित स्त्री मातृत्वकेँ अधिकार सँ जोड़ि नव अर्थ देबाक दावा करैत अछि। आंदोलनक इतिहासकृखास क' अम्बेडकरी परंपरामेँकृदलित स्त्री सभक भागीदारी केवल 'सहायक' नहि, बल्कि नीतिगत दबाव बनाबैवला अग्रिम पाँति रहल अछि; एहि सँ स्पष्ट होइत अछि जे समुदाय–निर्माणमेँ हुनकर भूमिका एजेंसीक असली आधार छै। रेजक अध्याय "कास्ट एण्ड जेंडररू द वायलेंस अगेंस्ट वीमेन इन इंडिया" एहि संरचनात्मक हिंसाकृदलित स्त्री विरुद्ध निजी हमलासभ केँ सामाजिक न्यायक ठोस एजेंडा सँ जोड़ि दैत अछि।

एहना ठाम मैथिली लेखन कथाजे दलित स्त्रीक काम, देह आ सम्मानक संघर्षकेँ केंद्रमेँ राखैत अछि, ओ केवल 'प्रतिनिधित्व' नहि, बल्कि ज्ञानक ठेकाना बदलैत अछि। दलित स्त्री–विमर्श हमरासभकेँ सिखबैत अछि जे साहित्य समाजक 'मॉरल आर्काइव' भेल, त' ओहिमेँ ओहि सभक गवाही पहिलै राखल जाय जे सभसँ नीचला तहमेँ चोट

सहैत अछि।

निष्कर्ष

स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्यक दलित विमर्श साहित्यिक–समाजशास्त्रीय चेतना कैं नब ढंग सँ परिभाषित करैत देखाय देइछ। ई विमर्श 'अनुभव' कैं केन्द्र मानि क' जाति–आधारित हीनता, अपमान आ श्रमक अदृश्य संसार कैं कथा, कविता, नाटक आ आत्मकथ्यक मुख्य सरोकार बनौने अछि। परिणामस्वरूप पाठ मात्र सौंदर्यबोधक वस्तु नहि रहि जाय छैक, बल्कि नैतिक–लोकतांत्रिक आग्रहक मंच बनैत अछिकृजकरा मैं 'गरिमा', 'अधिकार' आ 'एजेंसी' जेकाँ शब्द सभ साहित्यिक व्याकरणमैं स्थापित होइछ। दलित स्त्री–अनुभवक बहुस्तरीय पीड़ाकृदेह–राजनीति, घरेलू श्रम, असुरक्षा आ समुदायक स्मृतिसँ जुड़लकृमैथिली लेखनमैं नब पात्र–ध्वनि, लोक–बोली आ अंतरालक औचित्यक संग उभरि आबैछ। एकरा संग आलोचना–परंपरामैं सेहो परिवर्तन देखाइत अछिकृजाति आ लिंग कैं अलग–अलग नहि, बल्कि अंतर्संबंध रूपैं पढ़बाक आग्रह मजबूत भेल अछि, आ "कला लेल कला"क स्थान पर "कला कैं सामाजिक दायित्व"क नैतिकता बल पबैछ। एतबेक बावजूद किछु सख्त सीमासभौं छैक। संपादकीय मंडली, पुरस्कार–संस्था आ पाठ्यचर्या–निर्धारणमैं प्रतिनिधित्वक कमी कारण अनेकाँ सशक्त रचनासभ मात्र 'टोकन' उपस्थिति बनि रहि जाइत छैक; मानक बदलबाक घोषणा होइत अछि, पर चयन–प्रक्रियाक भीतर पुरान धारणासभ टिकले रहै छै। दोसर, मैथिली–हिंदी/अंग्रेजी अनुवादक अभाव आ क्षेत्रीय बाज़ारक दबाब लेल कतेक महत्त्वपूर्ण कृति सीमित पाठक वर्ग धरि सिमटि जाइत अछि; पाठशाला–विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रममैं ओ असंगत रूपैं उपस्थित रहै छै। तेसर, कतिपय लेखनमैं 'पहचान' एतबा स्थिर कएल जाइत अछि जे वर्ग, प्रव्रजन, धर्म अथवा यौनिकता जेकाँ अन्य आयामक सूक्ष्मता धुंधलका मैं पड़ि जाइत अछि। चउथ, विमर्शक भीतर पितृसत्तात्मक प्रवृत्तिसभ दलित स्त्री आवाज कैं पछाड़ि देबा चाहैत छैक; एहि आवाजक संस्थागत सहयोग आ आलोचनात्मक ग्रहणशीलताक आवश्यकता एखनुओ तात्कालिक अछि।

Author's Declaration:

The views and contents expressed in this research article are solely those of the author(s). The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible for any errors, ethical misconduct, copyright infringement, defamation, or any legal consequences arising from the content. All legal and moral responsibilities lie solely with the author(s).

संदर्भ

1. वियोगी, तारानांद. (2018). हस्तक्षेप. मैथिली अकादमी, पटना.
2. वियोगी, तारानांद. (2020). मैथिली साहित्यरू दलित विमर्श. अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली.
3. रानी, विभा. (2017). दूसरा आदमी, दूसरी औरत. प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
4. रानी, विभा. (2022). कनिया एक घुंघरूआ वाली. अंतिका प्रकाशन, नई दिल्ली.
5. चौधरी, आर. के. (1976). मैथिली साहित्य का सर्वेक्षण. पटनारू रामविलास साहू।
6. अकादमी. (2010). मैथिली साहित्य का इतिहास. साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली.
7. लिंबाले, शरणकुमार. (2004). दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र (तृ. सं.). वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली.
8. गुरु, गोपाल. (2001). Dalit Women Talk Differently- Economic and Political Weekly, 6(16) 1362-1364.
9. रेगे, शर्मिला. (1998). Caste and Gender: The Violence Against Women in India- Indian Journal of Gender Studies, 51.
10. वाल्मीकि, ओमप्रकाश. (2003). दलित साहित्यः एक सैद्धांतिक समझ. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली.

Cite this Article-

'डॉ0 स्वीटी कुमारी,', 'स्वतंत्रोत्तर मैथिली साहित्य मैं दलित विमर्श', Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume: 1, Issue: 04, July-August 2025.
Journal URL- https://www.shodhpith.com/index.html
Published Date- 14 July 2025
DOI-10.64127/Shodhpith.2025v1i40010